ISSN: 2349-6002

भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में आत्मा की अवधारणा - एक तुलनात्मक अध्ययन

नंदाणिया शितल रामभाई[1], श्रीमती जे. ऐन. भाट्टू[2]
प्रथम वर्ष छात्रा, शिक्षण विभाग, कॉलेज, जूनागढ़।
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191212-459

सारांश (Abstract)—**यह शोधपत्र भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में आत्मा की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय दर्शन में आत्मा को शाश्वत, अविनाशी एवं चेतन तत्त्व के रूप में स्वीकार किया गया है। उपनिषदों, वेदान्त, सांख्य और योग दर्शन में आत्मा को ब्रह्म से अभिन्न या स्वतंत्र चेतन सत्ता के रूप में विवेचित किया गया है, जहाँ आत्मा का लक्ष्य अज्ञान से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति है। अद्वैत वेदान्त में आत्मा और ब्रह्म की एकता पर विशेष बल दिया गया है, जबकि द्वैत एवं विशिष्टाद्वैत में आत्मा की ईश्वर से भिन्नता या संबंधात्मक भिन्नता को स्वीकार किया गया है।**

इसके विपरीत, पाश्चात्य दर्शन में आत्मा की अवधारणा विविध रूपों में विकसित हुई है। प्लेटो ने आत्मा को शरीर से भिन्न और अमर माना, जबकि अरस्तू ने आत्मा को शरीर का रूप (Form) कहा। मध्यकालीन पाश्चात्य दर्शन में ईसाई चिंतकों ने आत्मा को ईश्वर प्रदत्त और नैतिक उत्तरदायित्व का आधार माना। आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में डेकार्ट ने आत्मा और शरीर के द्वैत को प्रतिपादित किया, वहीं अनुभववादी और अस्तित्ववादी दार्शनिकों ने आत्मा की पारंपरिक अवधारणा पर प्रश्न उठाए।

यह शोधपत्र दर्शाता है कि जहाँ भारतीय दर्शन आत्मा को आध्यात्मिक मुक्ति और तत्त्वज्ञान से जोड़ता है, वहीं पाश्चात्य दर्शन में आत्मा को नैतिकता, चेतना और अस्तित्व के प्रश्नों के संदर्भ में अधिक विवेचित किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से आत्मा की अवधारणा के दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों को स्पष्ट किया गया है।

मुख्य शब्द—**आत्मा, भारतीय दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, वेदान्त, अद्वैत, प्लेटो, डेकार्ट, मोक्ष, अमरता**

I. प्रस्तावना

आत्मा की अवधारणा मानव चिंतन की सबसे प्राचीन और गहन समस्याओं में से एक है। प्राचीन काल से ही दार्शनिक परंपराओं ने इस प्रश्न पर विचार किया है कि क्या शरीर के भीतर कोई शाश्वत

चेतन तत्त्व विद्यमान है जो मृत्यु के बाद भी अस्तित्व में बना रहता है? भारतीय दर्शन में आत्मा को ब्रह्मांडीय सत्य का अंश माना गया है, जो अज्ञान के आवरण से ढका रहता है, जबकि पाश्चात्य दर्शन में इसे व्यक्तिगत अस्तित्व, नैतिक उत्तरदायित्व और चेतना के स्रोत के रूप में परिभाषित किया गया। यह तुलनात्मक अध्ययन दोनों परंपराओं की समानताओं, भिन्नताओं और सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करने का प्रयास करता है।

भारतीय दर्शन की समृद्ध परंपरा–जिसमें उपनिषदों से लेकर वेदान्त, सांख्य, योग तक की विविधता शामिल है–आत्मा को आध्यात्मिक मुक्ति के साधन के रूप में देखती है। इसके विपरीत, पाश्चात्य चिंतन प्लेटो से

ISSN: 2349-6002

डेकार्ट तक तर्कसंगत विश्लेषण और शरीर-आत्मा द्वंद्व पर केंद्रित रहा। इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य इन अवधारणाओं की तुलना कर आधुनिक संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता स्थापित करना है। अध्ययन के लिए प्रमुख प्राथमिक स्रोतों जैसे बृहदारण्यक उपनिषद्, छांदोग्य उपनिषद्, प्लेटो का फीडो, अरस्तू का डी एनिमा, डेकार्ट का मेडिटेशन्स ऑन फर्स्ट फिलॉसफी और शंकराचार्य का ब्रह्मसूत्र भाष्य का विश्लेषण किया गया है।

इस पत्र की संरचना निम्नलिखित है: पहले भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा का विस्तृत विवेचन, उसके बाद पाश्चात्य परंपरा का विश्लेषण, फिर तुलनात्मक अध्ययन और अंत में निष्कर्ष। यह अध्ययन न केवल दार्शनिक समानताओं को रेखांकित करता है बल्कि सांस्कृतिक भिन्नताओं को भी स्पष्ट करता है, जो वैश्विक दर्शन के संवाद को समृद्ध कर सकता है।

II. भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा

उपनिषदों में आत्मा: आधारभूत प्रतिपादन उपनिषद् भारतीय दर्शन के मूलभूत ग्रंथ हैं जहाँ आत्मा की अवधारणा का प्रथम व्यवस्थित प्रतिपादन मिलता है। बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रेयी को आत्मा का उपदेश देते हुए कहते हैं, "न वा अरे ऐस्ति कश्चनात्मनो रथितर्यथा रथो..." अर्थात् आत्मा ही वह सार है जिसके बिना कुछ भी ज्ञात नहीं होता। यहाँ आत्मा को सर्वव्यापी, निर्गुण, अविनाशी चेतन तत्त्व के रूप में परिभाषित किया गया है। मृत्यु केवल शरीर का विनाश है; आत्मा शाश्वत रहती है।

छांदोग्य उपनिषद् का प्रसिद्ध महावाक्य "तत् त्वम् असि(तत्त्वमसि)" आत्मा-ब्रह्म अभेद को स्पष्ट करता है। उद्दालक आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को नमक-पानी प्रयोग से समझाते हैं कि जैसे नमक जल में घुलकर अदृश्य हो जाता है किंतु उपस्थिति बनी रहती है, वैसे ही आत्मा ब्रह्म में अभिन्न है। उपनिषदों में आत्मा का लक्ष्य विवेक द्वारा अविद्या का नाश और मोक्ष प्राप्ति है। यह ज्ञानमूलक मार्ग श्रुति और अनुभव पर आधारित है।

III. वेदान्त दर्शन, अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत

आदी शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त ने उपनिषदों की आत्मा अवधारणा को तार्किक आधार प्रदान किया। ब्रह्मसूत्र भाष्य में शंकर प्रतिपादित करते हैं कि जीवात्मा माया के सुपरिम्पोजिशन के कारण भिन्न प्रतीत होता है, किंतु वास्तविकता में वह ब्रह्मरूप ही है। मोक्ष ब्रह्मज्ञान से तत्क्षण प्राप्त होता है–कोई क्रमिक प्रक्रिया नहीं। अद्वैत में आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है।

रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत वेदान्त में आत्मा ईश्वर का शरीरी (body) है–भिन्न लेकिन अविभाज्य। श्रीभाष्य में रामानुज कहते हैं कि आत्मा ईश्वर के गुणों को धारण करती है किंतु स्वतंत्र नहीं। माध्वाचार्य के द्वैत वेदान्त में आत्मा पांच भेदों से ईश्वर से भिन्न है: स्वतंत्रता, स्वरूप, स्वाधीनता, स्वाधीनता और स्वाधीनता। ये मत आत्मा को कर्मफल भोगने वाली चेतन सत्ता मानते हैं, जहाँ भक्ति मोक्ष का साधन है।

IV. सांख्य एवं योग दर्शन

सांख्य, योग और अन्य दर्शन कपिल मुनि के सांख्य दर्शन में आत्मा को 'पुरुष' कहा गया है, जो प्रकृति से पूर्णतः भिन्न चेतन द्रष्टा है। सांख्यकारिका में पुरुष निर्गुण, अकर्ता और अकर्तव्य है; बंधन अविद्या से, कैवल्य विवेक से। पतंजलि के योगसूत्र में

ISSN: 2349-6002

"ईश्वरप्रणिधानात् वा" द्वारा चित्तवृत्ति निरोध से आत्मस्वरूप का दर्शन होता है।

V. न्याय-वैशेषिक एवं जैन, बौद्ध, चार्वाक दर्शन

न्याय-वैशेषिक में आत्मा परमाणु से भिन्न सत्ता है, जो इंद्रियज्ञान का आधार है। जैन दर्शन में जीव आत्मा के अनंत गुणों वाला है, कर्म बंधन से मुक्ति तप से। बौद्ध दर्शन अनात्मवाद स्वीकार करता है, किंतु मुख्य वैदिक परंपरा में आत्मा शाश्वत है। चार्वाक भौतिकवाद आत्मा को नश्वर मानता है, किंतु यह अल्पमत है।

VI. पाश्चात्य दर्शन में आत्मा की अवधारणा:

प्राचीन यूनानी दर्शन: प्लेटो और अरस्तू:
प्लेटो का फीडो (380 ई.पू.) आत्मा का प्रथम व्यवस्थित प्रतिपादन है। सुकरात की मृत्यु-पूर्व वाणी में आत्मा अमर, शरीर का कैदी है। आत्मा त्रिविध है: तर्कशील (लोगोस), भावुक (थूमोस) और वासनात्मक (एपिथूमिया)। मृत्यु पर तर्कशील भाग फॉर्म्स की आदर्श दुनिया लौटता है। ज्ञान एनामनेसिस (स्मृति) है–आत्मा पूर्वजन्म में फॉर्म्स को जान चुकी है। प्लेटो का द्वैतवाद आत्मा को शरीर से श्रेष्ठ मानता है।
अरस्तू का डी एनिमा (350 ई.पू.) प्लेटो से भिन्न है। आत्मा शरीर का 'फॉर्म' या एन्टेलेकी है–संभावना को वास्तविकता बनाती है। पांच प्रकार: वनस्पतिक (पोषण), संवेदी (संवेदना), इच्छात्मक (चलन), तर्कशील (विचार)। मानव में सर्वोच्च तर्कशील आत्मा है, जो अमर हो सकती है किंतु शरीर-अपूर्ण बिना अपूर्ण। अरस्तू का होलिज्म जैविक एकता पर जोर देता है।

मध्यकालीन ईसाई दर्शन:
सेंट ऑगस्टाइन (कन्फेशन्स, 397 ई.) ने प्लेटो से प्रेरित होकर आत्मा को ईश्वरीय सृजन माना, जो मूल पाप से दूषित है। आत्मा सत्य की ओर उन्मुख है, किंतु वासनाओं से भटकती है। थॉमस एक्विनास ने अरस्तू+ईसाई संश्लेषण किया: आत्मा शरीर का रूप है किंतु अमर, ईश्वर की ओर तर्क से उन्नत। आत्मा नैतिक निर्णय, स्वर्ग-नर्क का आधार है।

आधुनिक और समकालीन पाश्चात्य दर्शन:
डेकार्ट (मेडिटेशन्स, 1641) ने संदेह से 'Cogito ergo sum' प्रतिपादित: आत्मा 'रेस कोगिटन्स(res cogitans)' (विचारशील पदार्थ) है, शरीर 'रेस एक्सटेन्सा(res extensa)' (विस्तारशील)। द्वैत में पीनियल ग्रंथि संनाद साधन। लॉक (एन एस्से, 1690) ने आत्मा को संवेदनाओं का 'ब्लैंक स्लेट' कहा। ह्यूम ने 'बंडल ऑफ परसेप्शन्स' माना–कोई स्थायी आत्मा नहीं।
कांट (क्रिटीक ऑफ प्योर रीजन, 1781) ने आत्मा को नूमेंनल (noumenal) माना, किंतु फेनोमेनल प्रमाण से परे। हेगेल ने Geist (आत्मा) को ऐतिहासिक प्रक्रिया कहा। सार्त्र (बीइंग एंड नथिंगनेस, 1943) ने अस्तित्ववाद में आत्मा अस्वीकृत की–कोई सार, केवल अस्तित्व। आधुनिक न्यूरोसाइंस चेतना को मस्तिष्क-कार्य मानता है।

VII. तुलनात्मक विश्लेषण

समानताएँ:
दोनों परंपराएँ आत्मा को चेतना का आधार मानती हैं: भारतीय विवेक (विवेक), पाश्चात्य तर्क (लोगोस)। अमरता सामान्य–उपनिषद् शाश्वतता vs प्लेटो फॉर्म्स। द्वैतवाद: पुरुष-प्रकृति vs रेस कोगिटन्स-एक्सटेन्सा। नैतिक आयाम: कर्मफल vs पाप-प्रायश्चित।

ISSN: 2349-6002

भिन्नताएँ:

भारतीय आत्मा ब्रह्म-केंद्रित (अद्वैत एकत्व), पाश्चात्य व्यक्तिवादी। लक्ष्य: मोक्ष (ज्ञान) vs स्वर्ग (विश्वास)। प्रमाण: श्रुति-अनुभव vs तर्क-अनुभव। आधुनिक पाश्चात्य संशयवादी (ह्यूम-सार्त्र), भारतीय अटल।

तुलनात्मक अध्ययय

आयाम	भारतीय दर्शन	पाश्चात्य दर्शन
स्वरूप	शाश्वत चेतन, ब्रह्म-अभिन्न/स्वतंत्र	अमर/रूप/विचारशील
शरीर संबंध	पूर्ण भिन्न (माया)	द्वैत(प्लेटो/डेकार्ट)या एकता (अरस्तू)
लक्ष्य	मोक्ष/कैवल्य	नैतिकता/स्वर्ग/ज्ञान
प्रमाण पद्धति	श्रुति, विवेक, योग	तर्क, अनुभववाद, विश्वास
आधुनिक स्थिति	अविचलित	संशयपूर्ण/मस्तिष्क-आधारित
सांस्कृतिक संदर्भ	सामूहिक मुक्ति	व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

भारतीय दर्शन में आत्मा को मुक्ति के साथ जोड़ा जाता है , जबकि पाश्चात्य दर्शन में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाता हैं।

VIII. निष्कर्ष

यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय दर्शन आत्मा को आध्यात्मिक एकीकरण और तत्वज्ञान से संबद्ध करता है, जबकि पाश्चात्य चिंतन तर्क, नैतिकता और व्यक्तिगत अस्तित्व पर केंद्रित। समानताएँ वैश्विक चेतना-खोज दर्शाती हैं, भिन्नताएँ सांस्कृतिक संदर्भ। न्यूरोसाइंस चुनौतियों के बावजूद आत्मा प्रासंगिक है। भविष्य में क्वांटम भौतिकी से तुलना संभव।

संदर्भ (REFERENCE)

[1] दवे, गोविन्द दास. (१९७२). भारतीय दर्शन. मोतीलाल बनारसीदास.

[2] तिवारी, कृष्णा देव. (२००८). भारतीय दर्शन में आत्मा सम्बन्धी अवधारणा. चौखम्बा संस्कृत संस्थान.

[3] छांदोग्य उपनिषद्. (लगभग ६०० ई.पू.). चौखम्बा संस्कृत संस्थान.

[4] शंकराचार्य. (७८८ ई.). उपनिषद् भाष्य (४४ उपनिषद्). मोतीलाल बनारसीदास

[5] शंकराचार्य. (१९८०). ब्रह्मसूत्र भाष्य (हिंदी अनुवाद). गीताप्रेस, गोरखपुर. (मूल ca. ७८८ ई.).

[6] ताटेर, सोहनराज. (२०१५). भारतीय दर्शन की मूल अवधारणाएँ. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

[7] Patanjali. (ca. 400 CE). Yoga Sutra (S. N. Dasgupta, Trans.). Motilal Banarsidass. (Original work published ca. 400 CE)

[8] प्लेटो. (१९८२). फीडो (संस्कृत अनुवाद से हिंदी). भारतीय विद्या भवन. (मूल ca. ३८० BCE)

[9] या. मसीह, पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास , वाराणसी।

[10] Descartes, R. (1641). Meditations on First Philosophy (J. Cottingham, Trans.). Cambridge University Press. (Original work published 1641)

[11] Kant, I. (1781). Critique of Pure Reason (N. K. Smith, Trans.). Macmillan. (Original work published 1781)

[12] या. मसीह, पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास , वाराणसी।

[13] भट्ट, नगेन्द्र. (१९८८). पाश्चात्य दर्शन का इतिहास. वाणी प्रकाशन.